International Journal of Jyotish Research: 2017; 1(2): 18-20

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2017; 2(2): 18-20
© 2017 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 15-05-2017
Accepted: 16-06-2017

Dr. Rajesh Sharma
Asstt. Prof. in Sanskrit
Higher Education Deptt. J & K, India

Correspondence
Dr. Rajesh Sharma
Asstt. Prof. in Sanskrit
Higher Education Deptt. J & K, India

जन्मकुण्डली में अशुभ सूर्य शान्ति हेतु उपाय

Dr. Rajesh Sharma

प्रस्तावना

सूर्य के अशुभ प्रभाव से बचने हेतु जातक को प्रतिदिन वा विशेषतयः रविवार के दिन निम्नवत् उपायों को अपनाना चाहिए।

क. <u>सूर्योपासना</u> :

सर्वप्रथम सवितृमण्डल के भीतर रहने वाले, पद्मासन में बैठे हुए, केयूर, मकर कुण्डल,किरीट तथा शंखचक्र धारी, हार पहने हुए स्वर्ण के सदृश्य देदीप्यमान शरीर वाले भगवानसूर्यनारायण का निम्न मन्त्र से ध्यान करना चाहिए।

ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती। नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी। हारी हिरण्मयवपुर्धृतषंचक्रः।। [1]

फिर सूर्योदय के समय नाभि भाग को खुला रखकर सूर्यदेव को प्रणाम एवं आवाहन निम्न मन्त्रों द्वारा करें।

1. ऊँ मित्राय नमः
2. ऊँ रवये नमः
3. ऊँ सूर्याय नमः
4. ऊँ भानवे नमः
5. ऊँ रवगाय नमः
6. ऊँ पूष्णे नमः
7. ऊँ हिरण्यगर्भाय नमः
8. ऊँ मरीचये नमः
9. ऊँ आदित्याय नमः
10. ऊँ सवित्रे नमः
11. ऊँ अर्काय नमः
12. ऊँ भास्कराय नमः
13. ऊँ श्री सवितृ सूर्यनारायणाय नमः

तत्पश्चात् किसी रक्त पात्र (ताँबे के लोटे) में शुद्ध जल लें, जिसमें लाल पुष्प, कुमकुम, अक्षत, रक्तचन्दन, आदि को मिलाकर सूर्यार्ध्य सूर्य के सामने खड़े होकर देने से विशेष लाभ होता है। अर्घ्य देते समय निम्न में से कोई भी मन्त्र बोलें।

1. ऊँ एहिं सूर्य सहस्त्रांषो तेजोराषे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्य दिवाकरः।।

अर्थात् हे सहस्त्रांशो। हे तेजोराशे। हे जगत्पते। मुझ पर अनुकम्पा करें। एवं भक्ति भाव से दिये गये मेरे इस अर्घ्य को स्वीकार करें।

2. ऊँ आकृष्णेन रजसा वर्तमानों निवेषयन्मृतं मर्त्यच।
हिरण्ययेन सविता स्थेना देवो यादि भुवनानि पष्यन्।। [2]

3. ऊँ जपाकुसमसंङ्काषं काष्यपेयं महाद्युतिम्
तमोऽरिं सर्व पापधनं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।। [3]

4. ऊँ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि।
तन्नो भानुः प्रचोदयात्।।

5. ऊँ भूभुर्वः स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रयोदयात्।। [4]

6. आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते।।

7. ऊँ आरोग्यप्रदायकाय सूर्याय नमः।

8. ऊँ घृणिः सूर्यः आदित्योम्।

9. ऊँ घृणिः सूर्याय नमः।

10. ऊँ ह्रीं ह्री सूर्याय नमः।

11. ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

12. ऊँ आदित्याय नमो नमः।

13. ऊँ भास्कराय नमो नमः।

14. ऊँ आदित्याय नमः। [5]

इत्यादि मन्त्रों से सूर्यदेव को नमस्कार करते हुए अर्घ्य देना चाहिए। अर्घ्य देने के बाद नीचे गिरे हुये जल को दाहिने हाथ से स्पर्शकर उसे मस्तक एवं आँखों पर लगाये तथा जो जल बचा हो उससे निम्न मन्त्र द्वारा आचमन करना चाहिए।

ऊँ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाषनम्।
सूर्यपादोदकं तीर्थ जठरे धारयाम्यहम्।।

इसके अतिरिक्त विधि – विधान से सूर्य का कवच :

ऊँ साम्ब साम्ब महाबाहो श्रृणु में कवचं शुभम्। [6]

सूर्याष्टकम् :

ऊँ आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर। [7]

श्री सूर्य स्तोत्र :

ऊँ नमः सवित्रे द्वाराय मुक्तेरमिततेजसे। [8]

श्री आदित्य हृदय स्त्रोत्रम् :

कथमादित्यमद्यन्तमुपतिष्ठेद द्विजोत्तम। [9]

सूर्य चालीसा :

जय सविता जय जपति दिवाकर। सहस्त्रांषु। सप्ताष्व तिमिरहर। [10]

आदि में से किसी एक का पाठ या स्तुति लौकिक या वैदिक मन्त्रों द्वारा करना विशेष शुभफलदायक एवं श्रेयस्कर होता है

ख. रत्न धारण :
यदि जन्मकुण्डली में सूर्य निर्बल, अशुभ एवं पीड़ाकारण हो तो जातक को हृदय रोग, शरीर में दुर्बलता, अस्थिदोश, राजकीय क्षेत्रों में असफलता आदि की प्राप्ति होती है इसके लिए विविध के अनुसार प्राचीन ऋषि मुनियों ने रत्न माणिक्य (Ruby) धारण करना शुभ बताया है।[11]

दुष्टऽर्के प्रयतः सुधीभिरङ्गे माणिक्यं परकर्ममन्त्रषुद्धम्।।

जिस प्रकार प्रत्येक जीवन में गुण एवं अवगुण होते है उसी प्रकार रत्नों में भी गुण एवं दोष पाए जाते हैं। सूर्य रत्न माणिक्य को रविवार उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा एवं पुष्य नक्षत्र में प्रातः 9:00 से 12:00 बजे के बीच में सोने या ताँबे की अंगूठी में प्राण प्रतिष्ठा एवं पव्योपचार पूजा के उपरान्त पुरुष एवं स्त्री को दाएँ हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। ज्योतिर्विदों का कथन है कि माणिक्य धारण करने के चार वर्ष तक इसका प्रभाव रहता है बाद में इसे बदल देना चाहिए तथा जो व्यक्ति माण्क्य धारण न कर सके उसे माणिक्य का उपरत्न लालड़ी अवश्यमेव धारण करना चाहिए।

ग. रविवार व्रत (उपवास)
अगर जातक की जन्मकुण्डली में सूर्य अनिष्टकारक हो (या) सर्वमनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्रप्राप्ति, नेत्ररोग, कुष्ठ रोग, चर्म रोगों आदि के निवारण के लिए रविवार के दिन व्रत करने का भी विधान शास्त्रकार बताते हैं। यह व्रत सूर्यषष्ठी विशेषकर रविवार अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करना चाहिए तथा कम से कम 12 अथवा एक वर्श प्रयत्न रखें। इस दिन प्रातः स्नानादि करके रविवार व्रत कथा का भी विशेष महत्त्व है। व्रत में सूर्यास्त से पूर्व एक समय गेहूँ या दलिया या मीठी रोटी का सेवन करना चाहिए जबकि इस उपवास में नमक का सेवन वर्जित कहा गया है।[12]

घ. सूर्य शान्ति हेतु दान एवं जप विधान :
पीड़ाकारक सूर्य ग्रह की शान्ति के लिए दान एवं जप विधान भी शास्त्रों में बताया गया है। जैसे जातकाभरणम् में कहा गया है किसूर्य ग्रह गोचर, अष्टक वर्ग या अपनी दशाकाल में अशुभ फल दे तो दान एवं जपादि से उसे प्रसन्न किया जा सकता है यथा :

ये सूर्य गोचरोऽष्टकवर्गादषा क्रमाद्वाप्य शुभाभवन्ति।
दानैर्जपादिनां ते संतुरा प्रसन्नास्तेना धुना।। [13]

इसलिए पीड़कारक सूर्य ग्रह की दशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा हो तो जातक को सूर्य से सम्बन्धित पदार्थों (रक्तवर्ण) का यथाशक्ति दान अवश्य करना चाहिए। जैसे भाव प्रकाश कार ने भी कहा है कि :

गोधूमान्नं गुडं ताम्रं का चनं रक्तचन्दनम्।
माणिक्यं रक्तवस्त्रं च गामर्काय निवेदयेत्।।[14]

अर्थात् संकल्प सहित सूर्य ग्रह की शान्ति के लिए गेहूँ, गुड़, ताम, सुवर्ण, रक्तचन्दन, माणिक्य, रक्तवस्त्र एवं गाया का दान श्रेष्ठ है एवं 'रवौ सप्तसहस्त्राणि' अर्थात् 'ऊँ ह्रां ह्री ह्रौं सः सूर्याय नमः' का कम से कम 7,000 जप सूर्योदय काल करना अधिक उत्तम है। यदिजातक स्वयं न कर सके तो किसी सुयोग्य विद्वान ब्राह्मण से करवाना चाहिए।

ङ. सूर्य शान्ति हेतु औषधि स्नान :
सूर्य शान्ति हेतु औषधि स्नान का वर्णन भी शास्त्रों में प्राप्त होता है। यथा :

लज्जावतीकुष्ठबलाप्रियङ्गुधनैश्च सिद्धार्थ निषाह्वयेन।
युक्तेन तोयेन च पुङ्खया शुभ स्नानं हि लोध्रेण खगर्दि तानाम्।।

अर्थात् सूर्य पीड़ा निवारण हेतु लाजवती कूठ, वरियार, कौनी, मोथा, पीली सरसों, हरिद्रा, लोंग एवं विषेशतयः देवदारु केसर, खस, इलाची, लालचन्दन, कनेर पुष्प, मुलेठी आदि औषधियों को जल में मिश्रित करके स्नान करने से पीड़ा से शीघ्र मुक्ति मिलती है।

च. सूर्य के अनिष्ट निवारण हेतु यन्त्र :

जन्मकुण्डली में सूर्य की अशुभ स्थिति तो या गोचरस्थ अशुभ सूर्य की दशा हो तो सूर्य यन्त्र धारण विधान भी ज्योतिर्विद् कहते हैं। यह यन्त्र शुक्लपक्ष के रविवार को कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा आदि नक्षत्रों में विधिपूर्वक अष्टगन्ध (केसर, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, अगर–तगर तथा कुमकुम) की स्याही तथा अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर सोने यातामा्र क तावीज़ में रखकर गले में धारण करें। शुभमुहूर्त में विधिपूर्वक धारण करने से सूर्य सम्बन्धी अनिष्ट प्रभाव का निवारण भी सम्भव हो पाता है।

छ. सूर्य शान्ति हेतु हवन एवं बलि विधान

ज्योतिर्ममज्ञों का कथन है कि सूर्य शान्ति हेतू पूजन एवं अनुष्ठान के बाद हवन करने का विधान है क्योंकि पूजा, जप, तप, अनुष्ठानआदि की सिद्धि के लिए हवन एक आवश्यक अंग माना गया है। इसके बिना कोई भी अनुष्ठान पूर्ण नहीं हो सकता। हवन वाले दिन स्नानोपरान्त चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर सूर्य भद्रमण्डल बनाकर एवं पूजन सामग्री एकत्रित करके सर्वप्रथम सूर्य की स्थापना निम्न मन्त्रों द्वारा करनी चाहिए। यथा :

जपा कुसुम सङ्काषं काष्ययेयं महाद्युतिम्।
तोऽरिं सर्वपापध्नं सूर्यं आवाहयाम्यहम्।।
ऊँ भूर्भवः स्वः कालिङ्ग देषोद्भव काष्यप गोत्र, रक्तवर्ण भो सूर्य। इहागच्छ इह तिष्ठ ऊँ सूर्याय नमः, सूर्य आवहयामि स्थापयामि नमः।।[15]

इस प्रकार भगवान सूर्य की स्थानोपरान्त अर्क समिघा व काष्ठ वा आम की लकड़ी से हवन करते हुए। सूर्य होमार्थ मन्त्र पढ़ना चाहिए।

ऊँ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेषयन्न मृतं मर्त्यञ्च
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पष्यन्।
ऊँ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम्।

एवं अन्त में सूर्य देव की प्रसन्नता हेतु निम्नलिखित मन्त्रों से सूर्य बलि कर्म भी अपनाना चाहिए। तथा :

ऊँ सूर्यायः नमः सूर्याय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सषक्तिकाय ईष्वराग्नि रूपाधि देवता प्रत्यधिदेवता सहिताय इमं सदीपमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो सूर्य! इमं बलिं गृहाण मम। सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता
वरदो भव। अनेने बलिदानेन सूर्य प्रीयन्ताम्।[16]

प्राचीन भारत में ऐसी सूर्यापासना धार्मिक अनुष्ठान के रूप में प्रचलित थी। हमारे ऋषि मुनियों ने मनुष्यों के लिए सूर्य–पूजा, सूर्यप्रणाम आदि बातों को धर्म के अन्तर्गत ला दिया था। वह युग श्रद्धा का युग था, तर्क का नही ंपरन्तु वर्तमान युग में लोग हर बात को तर्क की कसौटी पर कसते हैं एवं वैज्ञानिक आधार खोजते हैं। अर्वाचीन वैज्ञानिक सूर्य किरण और रंग चिकित्सा प्रणाली को ही सर्वश्रेष्ठ बताते हैं। उनका कथन है कि सूर्य चिकित्सा का वैज्ञानिक स्रोत सप्त रंग ही है क्योंकि रंग ही प्रकाश है एवं प्रकाश का स्रोत सूर्य। सूर्य की रश्मियों में 7 रंग (लाल, पीला, नारंगी, हरा, नीला, आसमानी, बैंगनी) पाए जाते हैं।[17] वैज्ञानिक भी इन्हीं रंगों का प्रयोग करके सूर्य किरण और रंग चिकित्सा के माध्यम से सूर्य तप्त जल तैयार करके औषधि निर्माण करते हैं। उनका कथन है कि सूर्य किरण और सूर्य तप्त जलही औषधि है और यह सिर के रोग, कान दर्द, बहरापन, बुखार, जलोदर रोग, आँखों के समस्त रोग, फेफड़ों के रोग, हड्डियों के रोग, विशका प्रभाव, वात–कफ रोग, मूत्र रोग, योनि रोग, टी. वी., रीढ की हड्डी के रोग, गर्मी से उत्पन्न आदि रोगों का उपचार करती है तथा मृत्युके बन्धनों को तोड़कर रोगी को आरोग्य प्रदान करती है।

इसके अतिरिक्त सूर्य हमारे लिए प्रकाश और ऊर्जा का स्रोत है। सूर्य की किरणों से ही वनस्पति और अन्य जीव अपना जीवन पाते हैं सूर्य की किरणों के कारण ही विटामिन डी और अन्य शरीर उपयोगी पदार्थ अपने आहार से शरीर के लिए ग्रहण करते हैं। अतः सूर्य की किरणें कष्ट को नष्ट करने वाली होकर हमारे शरीर की हड्डियों को भी मजबूत बनाती है। साथ ही प्रातः काल में सूर्य की अल्ट्रावायलटकिरणें शरीर के लिए बहुपयोगी होती है।

पाद टिपण्णी

1. सूर्योपासना पृ० 10
2. ऋग्वेद पृ० 138
3. अष्टादशपुराण पृ० 12
4. सूर्य गायत्री पृ० 2
5. सूर्य उपासना पृ० 31
6. सूर्य कवच पृ० 35
7. सूर्याष्टकम् पृ० 64
8. सूग्रस्त्रोतम् पृ० 10
9. आदित्यह्रदयस्त्रोतम् पृ० 12
10. सूर्य चालीसा पृ० 18
11. रत्नविज्ञान पृ० 51
12. पंचागदिवकार पृ० 31
13. जातकाभरणम् पृ० 108
14. भावप्रकाश 3/ 55
15. सूर्यसहस्त्रावली पृ० 225
16. सूर्योपासन पृ० 110
17. सूर्यचिकित्सा पृ० 18